परमात्म ऊर्जा

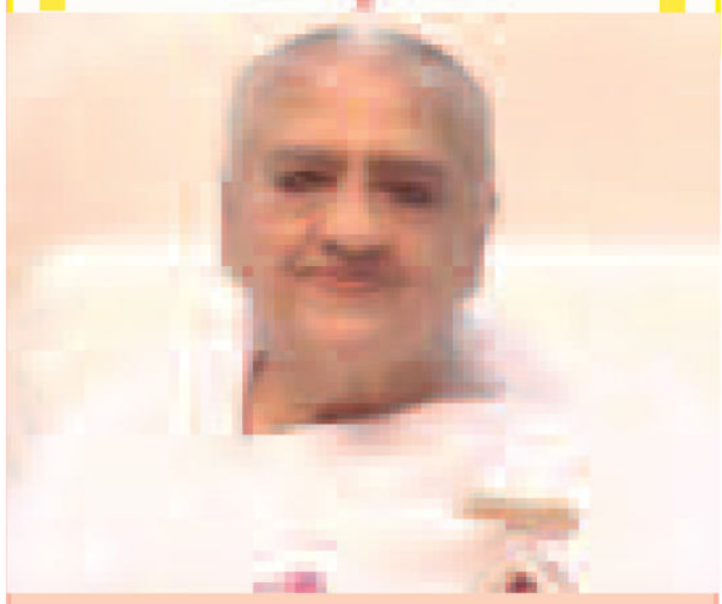

आवाज़ से परे की स्थिति प्रिय लगती है या आवाज़ में रहने की स्थिति प्रिय लगती है? कौन-सी स्थिति ज़्यादा प्रिय लगती है? क्या दोनों ही स्थिति इकट्ठी रह सकती हैं? इसका अनुभव है? यह अनुभव करते समय कौन-सा गुण प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है?(न्यारा और प्यारा) यह अवस्था ऐसी है जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ होता है, वैसे ही इस अव्यक्त स्थिति में जो भी संगमयुग के विशेष गुणों की महिमा करते हो वह सर्व विशेष गुण उस समय अनुभव में आते हैं। क्योंकि मास्टर बीजरूप भी हैं, नॉलेजफुल भी हैं। तो सिर्फ शान्ति नहीं लेकिन शान्ति के साथ-साथ ज्ञान, अतीन्द्रिय सुख, प्रेम, आनन्द, शक्ति आदि-आदि सर्व मुख्य गुणों का अनुभव होता है। न सिर्फ अपने को लेकिन अन्य आत्मायें भी ऐसी स्थिति में स्थित हुई आत्मा के चेहरे से इन सर्व गुणों का अनुभव करती हैं। जैसे साकार स्वरूप में क्या अनुभव किया? एक ही समय सर्व गुण अनुभव में आते हैं। क्योंकि एक गुण में सर्व गुण समाये हुए होते हैं। जैसे अज्ञानता में एक विकार के साथ सर्व विकारों का गहरा सम्बन्ध होता है, वैसे एक गुण के साथ मुख्य गुणों का भी गहरा सम्बन्ध है। अगर कोई कहे कि मेरी स्थिति ज्ञान-स्वरूप है, तो ज्ञान स्वरूप के साथ-साथ अन्य गुण भी उसमें समाये हुए ज़रूर हैं। जिसको एक शब्द में कौन-सी स्टेज कहेंगे? मास्टर सर्वशक्तिवान। ऐसी स्थिति में सर्व शक्तियों की धारणा होती है। तो ऐसी स्थिति बनाना- यह है समानता, सम्पूर्णता की स्थिति। ऐसी स्थिति में स्थित होकर सर्विस करती हो? सर्विस करने के समय जब स्टेज पर आती हो तो पहले इस स्टेज पर उपस्थित हो फिर स्थूल स्टेज पर आओ। इससे क्या अनुभव होगा? संगठन के बीच होते हुए भी अलौकिक आत्मायें दिखाई पड़ेंगी। अभी साधारण स्वरूप के साथ-साथ स्थिति भी साधारण दिखाई पड़ती है। लेकिन साधारण रूप में होते असाधारण स्थिति व अलौकिक स्थिति होने से संगठन के बीच जैसे अल्लाह लोग दिखाई पड़ेंगे। शुरू-शुरू में भी ऐसी स्थिति का नशा रहता था ना! जैसे सितारों के संगठन में विशेष सितारे होते हैं, उनकी चमक, झलक दूर से ही न्यारी और प्यारी लगती है। तो आप सितारे भी साधारण आत्माओं के बीच में एक विशेष आत्माएं दिखाई दो। जब कोई असाधारण वस्तु सामने आ जाती है तो न चाहते हुए भी सभी का अटेन्शन उस वक्त खिंच जाता है। तो ऐसी स्थिति में स्थित हो स्टेज पर आओ जो लोगों की निगाह आप लोगों की तरफ स्वतः ही जाये। स्टेज सेक्रेटरी परिचय न दे लेकिन आपकी स्टेज स्वयं ही परिचय दे। क्या हीरा धूल में छिपा हुआ भी अपना परिचय खुद नहीं देता है? तो संगमयुग पर हीरे तुल्य जीवन अपना परिचय स्वयं ही दे सकता है। अभी तक की रिज़ल्ट क्या है? मालूम है? अभी किस तुल्य बने हो? भाषण आदि जो करते हो उसकी रिज़ल्ट क्या दिखाई देती है? वर्तमान समय में जो नम्बरवन प्रजा कहें वह भी कम निकलते हैं। साधारण प्रजा ज़्यादा निकल रही है। अभी साधारण रूप में असाधारण स्थिति का अनुभव स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। बाह्यमुखता में आने के समय अन्तर्मुखता की स्थिति को भी साथ-साथ रखो- यह नहीं होता। या तो अन्तर्मुखी बनते हो या तो बाह्यमुखी बन जाते हो। लेकिन अन्तर्मुखी बनकर फिर बाह्यमुखी में आना - इस अभ्यास के लिए अपने ऊपर व्यक्तिगत अटेन्शन रखने की आवश्यकता है। बाह्यमुखी की आकर्षण अन्तर्मुखता की स्थिति से ज़्यादा होती है। इसका कारण यह है कि सदैव अपने श्रेष्ठ स्वरूप व श्रेष्ठ नशे में स्थित नहीं रहते। इसलिए स्थिति पॉवरफुल नहीं होती है।

कथा सरिता

मिजाज कुछ ऐसा हो

श्याम बहुत ही शैतान और गुस्सैल लड़का था। किसी से सीधे मुंह बात नहीं करता था। उसके पिता को अक्सर उसकी ऐसी शिकायत सुनने को मिलती रहती थी। वह सब से बुरा बर्ताव करता था और बात-बात पर गुस्सा भी करता। दूसरों से लड़ाई और मार-पीट भी करता था।

इस तरह की शिकायतों से उसके पिता तंग आ चुके थे। एक दिन उन्होंने अपने लड़के को बुलाया और घर के आंगन में लगे नीम के पेड़ से उसे एक हरी और एक सुखी डाली तोड़ कर लाने को कहा, फिर दोनों डालियों को श्याम को दे दिया और बारी-बारी से तोड़ने को कहा। सुखी डाल तो उसने एक ही झटके में तोड़ दिया लेकिन हरी डाल मुड़ गई लेकिन टूटी नहीं।

श्याम के पिता उससे बोले, देखो बेटा, सुखी डाल कठोर थी और टूट गयी, लेकिन हरी डाल नरम थी और टूटी नहीं।

इसी प्रकार जो लोग कठोर और गुस्सैल होते हैं, जिन में नरमी और धीरज नहीं होता है, वे बहुत ही जल्दी टूट जाते हैं। लेकिन जो लोग नरम होते हैं और गुस्सा कम करते हैं उन लोगों में परेशानियों का सामना करने की ताकत बहुत ही ज़्यादा होती है। उस दिन के बाद श्याम सुधर गया और सब से मिलकर रहने लगा।

लक्ष्य से न भटकें

एक नगर में चार भाई रहते थे। उनकी एक छोटी-सी बहन गुड़िया थी। एक बार गुड़िया बाहर जा रही थी तो चारों भाइयों ने कहा, देखो गुड़िया अकेले बाहर मत जाओ। लेकिन गुड़िया बोली, अब मैं बड़ी हो गई हूँ, थोड़ी दूर तो जा ही सकती हूँ। गुड़िया थोड़ी दूर बाहर गई। अचानक रास्ते में उसे एक राक्षस ने पकड़ लिया और अपनी गुफा में ले जाकर कैद कर दिया।

शाम तक जब गुड़िया घर पर वापस नहीं आई तो चारों भाइयों को चिंता होने लगी और उनमें से तीन भाई गुड़िया को खोजने निकले। रास्ते में उन्हें एक महात्मा मिले। तीनों भाइयों ने उस महात्मा से पूछा, हे महात्मा! आपने हमारी बहन गुड़िया को देखा है? उस महात्मा ने कहा, हाँ, उसे राक्षस इस रास्ते में अपनी गुफा में ले गया है। उस रास्ते पर जाओ मगर किसी कीमत पर पीछे मुड़कर मत देखना नहीं तो पत्थर बन जाओगे।

जब उस रास्ते पर तीनों भाई जाने लगे तो अचानक पीछे से ज़ोर से आवाज़ आई रूक जाओ! रूक जाओ! और जैसे ही उन्होंने रूक कर पीछे देखा तो तीनों तुरंत पत्थर बन गए।

घर पर रूके एक भाई ने बहुत समय तक इंतजार किया। जब तीनों भाई वापस नहीं आए तब वह खुद गुड़िया और तीनों भाइयों की तलाश में घर से बाहर निकला। उसे भी वही साधु बाबा मिले। साधु बाबा से पूछने पर उन्होंने बताया तुम्हारे भाई व बहन इधर उस रास्ते पर गए हैं, लेकिन पीछे मुड़कर मत देखना नहीं तो तुम पत्थर बन जाओगे। महात्मा ने कहा, जब वहाँ पहुंच जाओ, गुफा के अंदर जाने पर तुमको एक पिंजड़े में एक तोता मिलेगा। उसे मार देना और मारने के बाद जो लोग पत्थर बने होंगे वह लोग सही हो जाएंगे। चौथा भाई रास्ते पर जाने लगा। राक्षस ने उसे भी पीछे दिखाने की लिए बहुत लालच दिया लेकिन उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा और राक्षस की गुफा में जहाँ पर उसकी बहन को रखा था वहाँ पर गया और अपनी बहन को छुड़ाने के बाद पिंजरे में रखे तोते का सिर तोड़ दिया। जिससे राक्षस की जान चली गई और जितने लोग पत्थर बने थे सभी लोग सही हो गए।

सीख : इसलिए कहा गया है कि अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित हो तो आस-पास की घटनाएं उसे प्रभावित नहीं कर सकती हैं।

निरसा-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' कार्यक्रम में संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, मोटिवेशनल ट्रेनर एवं राजयोग शिक्षक प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन,मुम्बई, ईस्टर्न ज़ोन सेवाकेन्द्र संचालिका एवं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कानन दीदी, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन धनबाद जिला प्रभारी डॉ. ए.के. सिंह, होप क्लिनिक प्रभारी डॉ. अवंतिका, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जया बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

धरहरा-मुंगेर(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ जीआरएमसी के अंतर्गत रक्षाबंधन के अवसर पर धरहरा थाना प्रभारी रोहित कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. वंदना बहन व मिन्ता बहन।